विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – अष्टम दिनांक -13- 12- 2021

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक - पंकज कुमार

सुप्रभात् बच्चों आज वाच्य के बारे में पुनः अध्ययन करेंगे।

कर्मवाच्य

कर्मवाच्य की परिभाषा

जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष, कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हो, तो कर्मवाच्य कहलाता है अथवा क्रिया के उस रूपान्तर को कर्मवाच्य कहते हैं जिससे यह ज्ञात हो कि वाक्य में कर्ता की प्रमुखता न होकर कर्म की प्रमुखता है।

सरल शब्दों में - क्रिया के जिस रूप में कर्म प्रधान हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं या जहाँ क्रिया का संबंध सीधा कर्म से हो तथा क्रिया का लिंग तथा वचन कर्म के अनुसार हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।

उदाहरण-

- **मीरा ने दूध पीया।**
- **मीरा ने पत्र लिखा।**

पहले वाक्य में 'मीरा' (कर्ता) स्त्रीलिंग है परन्तु 'पीया'क्रिया का एकवचन, 'पुल्लिंग'रूप 'दूध'(कर्म) के अनुसार आया है।

दूसरे वाक्य में भी 'मीरा' (कर्ता) स्त्रीलिंग है परन्तु 'लिखा'क्रिया का एकवचन, 'पुल्लिंग'रूप 'पत्र'(कर्म) के अनुसार आया है।

अतः स्पष्ट है कि यहाँ कर्मवाच्य है।

ध्यान रखने योग्य बात यह है कि कर्मवाच्य सदैव सकर्मक क्रिया का ही होता है।

भाववाच्य

क्रिया के जिस रूप में न तो कर्ता की प्रधानता हो, न कर्म की, बल्कि क्रिया का भाव ही प्रधान हो, वहाँ भाववाच्य होता है। इसमें मुख्यतः अकर्मक क्रिया का ही प्रयोग होता है और साथ ही प्रायः निषेधार्थक वाक्य ही भाववाच्य में प्रयुक्त होते हैं। इसमें क्रिया सदैव पुल्लिंग, अन्य पुरुष के एक वचन की होती है।

उदाहरण-

- **मोहन से टहला भी नहीं जाता।**
- **मुझसे उठा नहीं जाता।**
- **धूप में चला नहीं जाता।**

उक्त वाक्यों में कर्ता या कर्म प्रधान न होकर भाव मुख्य हैं, अतः इनकी क्रियाएँ भाववाच्य का उदाहरण हैं।

ध्यान रखने योग्य कुछ बातें

- **भाववाच्य का प्रयोग विवशता, असमर्थता व्यक्त करने के लिए होता है।**